International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.9 Issue. 3 Jan-Feb-2022

बाजार में आंधी दौड

डॉ. शंकर दळवी
राजर्षी शाहू कला तथा वाणिज्य , महाविद्यालय, रुकडी (महाराष्ट्र)
Email- shankardalavi1266@gmail.com

सारांश

भूमंडलीकरण और बाजारवाद पर ममता कालिया का प्रसिध्द उपन्यास है'दौड'।भूमंडलीकरण और आधुनिक समाज ने इक्कीसवी सदी में रोजगार और नौकरी के नये रास्ते खोले दिए । आर्थिक उदारीकरण ने भारतीय बाजार को शक्तिशाली बनाया। बहुराष्ट्रीय कंपनी में रोजगार के अवसर प्रधान किये। युवावर्ग ने पुरी लगन के साथ इस सिमसिम का द्वार खोला और इस मे प्रविष्ट हो गये। वर्तमान सदी में समस्त अन्य वादो के साथ एक नया वाद आरंभ हो गया बाजारवाद और उपभोगतावाद । ममता कालिया का ,'दौड 'यह उपन्यासभूमंडलीकरण ,व्यावसायिकता ,जीविकावाद, विज्ञापनबाजी ,उपभोक्तावाद आदि के मिश्रण से बने मनुष्य की कहानी बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है । बेशक इस दौर में,' दौड ' ने नये वर्ग की नयी पीढी के चरित्र के माध्यम से नये प्रतिमान और कीर्तिमान कायम किये है। बाजारवाद की इस प्रतिस्पर्धा से प्रतिस्पर्धा की तरफ जाती आंधी दौड ने नाते-रिश्ते ,मानविय संवेदना , लगाव ,परंपरा ,अर्थहीन ,दकियानूसी और बीता हुआ उच्छवास सिर्फ बनकर रह गये हैं । यहा रिश्ते बहुत व्यवहारिक, अर्थहीन और सतही है ।शहर का अर्थ केवल रोजगार में खुलता है ।यहा स्मृतियाँ एकदम व्यर्थ है सपने सिर्फ तरक्की से जुडे है और इस बाजार मे सब कुछ लील लिया है जो मनुष्य को मनुष्य बने रहने की ताकत नही देता है । आज की नई पिढी इंटरनेट , गुगल, यु- ट्युब ,मेल,ई-मेल, सरपिंग ,चॅटिंग में व्यस्त है । स्नॅपडील ,फ्लिप कार्ड,अमेझॉन , अलीबाबा जैसे ऑनलाइन शॉपिंग के मोह जाल मे फस गई है। आभासी तकनीकी अंतरजाल में 21 वी सदी में कही चुनौतियां और संधियो की अंधी दौड शुरू हो गई है।

प्रस्तावना-

' दौड़' यह ममता कालिया जी का प्रसिद्ध उपन्यास है। दौड़ के द्वारा बाजार के दबाव– समूह, उनके परोक्ष –अपरोक्ष मारक तनाव, आक्रमक और निर्ममता तथा अंधी दौड़ में नष्ट होते मनुष्य के आसन्न

खतरे में पड़े मनुष्यता को उजागर करती है। वर्तमान सदी मे समस्त वादो के साथ एक नया वाद प्रारंभ हो गया बाजारवाद और उपभोक्तावाद। 21 वी सदी का सिधा- साधा खरीददार एक चतुर उपभोक्ता बन गया।'दौड 'उपन्यास इस प्रभाव और तनाव की पहचान कराता है। दौड उपन्यास पर एक नजर डाले तो यह आज के समय की सटीक टिप्पणी है।आधुनिकता के नाम पर समाज में आ रहे जबरदस्त बदलाव का असर पडा है मानवीय संबंधो पर। पैसे , ग्लॅमर,भव्यता और चकाचौंध की दीवानी आज की नई पिढी किसी के भी कंधे पर पाव रख कर सफलता का चरम चुमना चाहती है।उसके लिए सामाजिक बंधन, परिवार , अपनापन, ममत्व सब कुछ छलावा है। केवल अपना जीवन जीना चाहती है जहा न दुसरो की उखाड- पछाड हो न दबाव और न ही इस्तमाल की जरा भी आशंका।

राकेश और रेखा के पवन और सघन दो पुत्र है।बच्चों के बेहतरन भविष्य के लिए मां-बाप मिलकर सुख-सुविधा समेटते है।।बच्चों के लिये महंगी और उंची शिक्षा देकर स्वप्निल दूनिया का दरवाजा दिखाते है।वही बच्चे आधुनिक बदले परिवेश में सरसराते हुए इतने आगे निकल जाते है कि उन्हे मां - बाप के किमती समय को याद करने का वक्त भी नही मिलता।टेक्निकल तथा इंटरनेट जीवन के आदी हो चुके इस बच्चों को अपने सपने ,अपने भविष्य अपने वैभव के आगे संबंधों की गरमाहाट बेमतलब लगने लगती है वे हडबडाट और जल्दबाजी में इन से छुटकारा पाने के लिए बेचैन रहते है या अपने रिश्ते और संबंधों को झटक ही देते है।

राकेश और रेखा शर्मा का बडा पुत्र पवन एमबीए कर चुका है।उसे इलाहाबाद जैसे छोटे शहरो में कोई काम नही मिलता। नॅशनल, मल्टिनॅशनल कंपनिओ में अनेक छलांग लगाते हुए लगातार प्रगती के पथ पर बढता ही पवन चला जा रहा है। माँ - बाप और भाई के लिए उसके मन में कोई जगह नही है। बाजार का आदी पवन हवा की तरह चला जा रहा है। पवन के जीवन में स्टेला आती है प्रबुद्ध ,कमाऊ, करिअरिस्ट दोनो लाइफ पार्टनर बनाने का निर्णय लेते है। माँ -बाप को पवन का फैसला अच्छा नही लगता। माँ उसे कहती है -"मैने तो कोई लडकी नही देखी जो शादी से पहले ही पती के घर मे रहने लगे। " राकेश और रेखा का द्वितीय पुत्र सघन अभी अपने कंप्यूटर करियर में मस्त है दोनों को अकेला छोडकर वह भी नौकरी के लिए निकल जाता है। राकेश - रेखा बुढापे में दोनो एक दूसरे का सहारा बने उसी घर में फोन, कम्प्युटर,

इमेल ,इंटरनेट में उलझे रहते है ।भूमंडलीकरण के दौड ने रिश्तो मे दिखावटीपन तथा मतलबीपन आ गया है ।बाजारवाद में हर नाते रिश्तो के संबंधो में सिर्फ मुनाफे ,नफा -नुकसान की बात आती है ।पहले रिश्तों के जगह पैसो की कोई अहमियत नही थी वह विश्वास तथा भरोसे पर चलते थे लेकिन आज कल बाजारवाद के कारण उसमें दरारे पड चुकी है। उत्पादक कंपनीओ में प्रचंड होड निर्माण हो गई है।

भूमंडलीकरण ने नाते रिश्ते तथा आपसी प्रेम भाव मे दिखावटीपन तथा मतलबीपन का बीज बोया है ।उत्पादक कंपनी तथा व्यवसायिको में प्रचंड होड के कारण मुनाफा कमाने के लिए होलसेलर, स्टॉककिस्ट, रिटेलर, डोअर टू डोअर कम्पियन कीया जा रहा है। अपना उत्पाद बढाना, बेचना तथा ग्रहाकों को तरह -तरह के प्रलोभन दिखाकर उनके जेबो से पैसा निकालने का काम बहुराष्ट्रीय कंपनी कर रही है ।आज का बाजार वाद सिर्फ लोगोंके जेबो से पैसा वसूलने का काम कर है और अपने माल की कोई गॅरंटी नही देता। बाजार वाद मे आज की नई पिढी पॅकेज पाने और अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए येडी -चोटी एक कर रही है। नई पिढी में भारी भक्कम वेतन पाने की लालसा तथा खुद को साबित करने का जुनून है। अपनी सारी जिंदगी वह कुछ सपनो में जीने की जिद कर रही है ।समय जिस तेजी से बदल रहा है उस तेजी से हमारे विचार नही बदल रहे है ।पैसा और ग्लॅमर सुख-सुविधा का साधन नही रह गया है। धीरेंद्र अस्थाना के अनुसार -" प्रतिस्पर्धा से प्रतिस्पर्धा की तरफ जाती आंधी दौड में सब कुछ बेनामी। "आज के बाजारवाद में नई पिढी को संवेदनहीन और स्वार्थांध बनाया है ।नाते -रिश्ते और परिवारवाद के इस संक्रमणकाल ने नई पिढी को' बाप हो या भैया सबसे बडा रुपैय्या यही साबित करने का प्रयास किया है। बाजार की अर्थवादिता विषला वैश्वीकरण फाईल रही है और प्रेमभाव, नाते -रिश्ते समाप्त हो रहे है ।बाजारवाद ने सभ्य संस्कृती को असभ्य संस्कृती की तरफ मोड दिया है। भूमंडलीकरण तथा बाजारवाद ने संक्रमण तथा संघर्ष की स्थिती निर्माण की है। स्वार्थ की पराकाष्टा होने के कारण आपसी होड ,संघर्ष तधा जानलेवा व्यवसायिकता ने लोगो मे वैरभाव निर्माण किया है ।बाजार के वर्चस्व ने सत्ता के समीकरण को बदल दिया है। कुछ देश वर्चस्ववादी के कारण आमने-सामने आकर युद्ध कर रहे है। बाजार पर वर्चस्व ,सत्ता की अभिलाषा अहभाव निर्माण कर रही है। यही बाजार तथा सत्ता की होड तृतीय महायुद्ध की दस्तक दे रही है

।रशिया -युक्रेन ,चीन - अमेरिका ,इराक -इराण ,दक्षिण कोरिया -उत्तर कोरिया में आज सत्तांधता की आंधी दौड निर्माण हो गई है ।आज के बाजारवाद को 'न ओर है ना छोरी है ' वह कहा जाकर रुकेगी पता नही ।वैश्विक मानवता के लिए वह प्रगती की ओर ले जायेगी या विनाश की ओर इसका पता नही है ।कायदे - कानून ,विवेकता से उन्हे नियंत्रित करने की आवश्यकता है ।बाजार के इस अँधी दौड को स्वार्थ की गहरी खाई तथा अंधेरी के तरफ जाने वाली इस दौड को हमे नये तथा उज्वल रास्ते की तरफ मोडने की आवश्यकता है ।तभी मानव जाती का विकास होगा और वह प्रगती के तरफ दौडेगी।

ग्रंथ सूची :-

1. दौड - ममता कालिया
2. दौड मे भूमंडलीकरण की सार्थकता का यथार्थ चित्रण-डॉ. विद्या शिंदे
3. ममता कालिया का व्यक्तित्व तथा कृतित्व-डॉ.बिजापुरे